# कहानी कथन कौशल

**बच्चों को कहानी सुनाना वाकई एक हुनर है। आइए देखते हैं कौन–कौन सी बारीकियाँ होती हैं कहानी सुनाने में।**

यह बड़े अफ़सोस की बात है कि हमारे प्राइमरी स्कूलों में पहली दो कक्षाओं के लिए प्रतिदिन कहानी सुनाने की कोई अलग 'घंटी' नहीं होती। यदि ऐसी व्यवस्था होती तो बच्चों को स्कूल में टिकाए रखने की समस्या कम–से–कम एक हद तक सुलझ जाती। बहुत से लोग कहेंगे कि मैं इस समस्या की गंभीरता की अवहेलना कर रहा हूँ। बहुत संभव है कि मेरा सुझाव सुनकर कई ऊँचे अधिकारी हिकारत के भाव से मुस्कुराएँ। उनके विशाल अनुभव और प्रशासनिक ज्ञान ने यह समझ अवश्य उनके दिमाग़ से हटा दी होगी, जो मेरी समझ में उनके पास एक समय में ज़रूर रही होगी, कि कहानी सुनाने का बच्चों पर एक जादुई असर होता है।

यह बहुत ही गहरे अफ़सोस की बात है कि हमारी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ भी कहानी सुनाने को गंभीरता से नहीं लेतीं हालाँकि उनमें से कुछ अपने पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने के महत्त्व का ज़िक्र ज़रूर कर देती हैं।

मेरे मन में एक ऐसे दिन की कल्पना है जब छोटे बच्चों को पढ़ानेवाले हर शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि कम–से–कम तीस पारम्परिक कहानियों पर उसका अधिकार हो। अधिकार से मेरा आशय है कि ये कहानियाँ उसे अच्छी तरह याद हों ताकि वह उन्हें इत्मीनान और आत्मविश्वास के साथ सुना सके। यह एक ऐसे समाज के लिए कोई बड़ी बात नहीं है जिसके पास हज़ारों कहानियों की एक लंबी विरासत है। तीस ऐसी कहानियाँ, जिन्हें अध्यापक अपनी मर्ज़ी से जब चाहे सुना सके, प्राइमरी स्कूल के पहले दो दर्जों का माहौल बदलकर रख देंगी। शर्त इतनी भर है कि दैनिक पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक सम्मानजनक जगह इस ख़ातिर दी जाए कि कहानी सुनाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

**कहानियाँ कहाँ से लाएँ?**

पिछले पैराग्राफ में मैंने एक विशेषण का इस्तेमाल किया है जिसे मैं अब आगे बढ़ने से पहले स्पष्ट करना चाहता हूँ। मैंने लिखा है कि मैं पारम्परिक कहानियाँ सुनाने के पक्ष में हूँ। युवा अध्यापकों को कहानी सुनाने का प्रशिक्षण देने का मेरा अनुभव बताता है कि जब उनसे सुनाने लायक कहानियाँ तलाशने को कहा जाता है, तो वे प्रायः बच्चों की किसी पत्रिका में छपी हुई कहानियाँ ले आते हैं। उनमें से कुछ लोग कॉमिक्स कथाएँ उठा लाते हैं और कुछ लम्बे चुटकुले और असली घटनाओं के बयान याद करके ले आते हैं। यह सही है कि इस क़िस्म की सामग्री को भी 'कहानी' की श्रेणी में रखा जा

सकता है, लेकिन इस तरह की प्रत्येक कहानी से हम प्राइमरी स्कूल में पढ़नेवाले छह या सात साल के बच्चों पर जादुई असर करने की उम्मीद नहीं कर सकते।

परम्परा से मिली हुई कहानियों में ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो समकालीन कहानियों में, जिन्हें हम विविध रूपों और माध्यमों में देखते हैं, अनिवार्यतः नहीं पाई जातीं। इन विशेषताओं की चर्चा हम जल्दी करेंगे, लेकिन पहले मैं पारम्परिक कहानियों के कुछ स्रोतों का ज़िक्र करना चाहूँगा। सबसे पहले पंचतंत्र, जातक, महाभारत, सहस्र रजनी चरित्र, विक्रमादित्य की कहानियाँ और विभिन्न इलाकों की लोक–कथाएँ सहज और समृद्ध स्रोतों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। इनके बाद हम कथा सरितसागर, गुलिस्ताँ और बोस्ताँ की कहानियाँ और दुनियाभर की लोक–कथाओं को रख सकते हैं। ये स्रोत आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए यदि कोई पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक नियमित जगह देना चाहता है तो उसे इन तमाम स्रोतों से चुनी गई कहानियों का एक संकलन बनाना होगा।

**कहने लायक कहानी**

एक अच्छी कहानी में कौन–सी विशेषताएँ होती हैं, यह जानने के लिए एक सरल रास्ता एक ऐसी कहानी की जाँच करने का है जिसे बच्चे पीढ़ियों से आनंदपूर्वक सुनते आ रहे हैं। पंचतंत्र की शेर और खरगोश की कहानी एक ऐसा उदाहरण है। इस कहानी का कथानक उतना आसान नहीं है जितना हम कहानी से अपने परिचय के कारण मान लेते हैं। क्यों न हम पहले इस कहानी के प्रमुख मोड़ याद कर लें।

कहानी में एक दिन वह आता है जब नन्हे खरगोश को बूढ़े शेर के सामने पेश होना होता है। शेर के दरवाज़े तक पहुँचने में खरगोश ने इतनी देर कर दी है कि शेर भूख के मारे पागल हो रहा है। यह निर्णायक क्षण शेर के साथ किसी भी तरह की सौदेबाजी के लिए एकदम अनुपयुक्त है क्योंकि शेर गुस्से से बुरी तरह भरा बैठा है, लेकिन खरगोश अनुपयुक्त क्षण में अपनी बात रखता है कि उसे इतनी देर कैसे हो गई? रास्ते में एक दूसरे शेर से मिलने की बात पूरी तरह झूठ है, लेकिन यह बात भूखे, नाराज़ शेर के शाही दिमाग़ में बैठ जाती है। अब वह पहले अपने प्रतिद्वंद्वी से निपटना चाहता है और इसके लिए वह खरगोश के साथ उस कुएँ की तरफ़ चल पड़ता है जहाँ दूसरे शेर के रहने की बात उसे बताई गई है। इस दूसरे निर्णायक क्षण में खरगोश अपनी धोखेबाज़ी और शेर की पागल नाराज़गी और ईर्ष्या, जिसे उसी ने जगाया है, पर भरोसा करके आगे बढ़ता है। कुएँ में अपनी परछाईं देखकर शेर आपा खो बैठता है और कूदकर मर जाता है।

आइए, इस पुरानी, परिचित कहानी को ज़रा बारीक़ी से देखें। पहली बात तो यह है कि कहानी की विषयवस्तु में कोई उपदेश नहीं है। उल्टे, यह कहानी सीधे–सीधे इस तरह के गंभीर सवालों से जूझती है– जैसे कि किसी भी पाश्विक ताक़त के सामने या मौत के वास्तविक ख़तरे से अपने को कैसे बचाया जाए? आमतौर पर बच्चों से बातचीत के दौरान हम ऐसे प्रश्नों को नहीं उठाते, लेकिन ज़ाहिर है कि बच्चों की ऐसे प्रश्नों में गहरी रुचि होती है। हम पूछ सकते हैं कि इस रुचि का क्या कारण है? पर

इस सवाल की चर्चा मैं कुछ देर में करूँगा। इस बीच मैं एक और बड़ी विशेषता पर विचार करना चाहता हूँ। यह कहानी एक ऐसे छोटे प्राणी की है जो एक बड़े ताक़तवर प्राणी द्वारा पैदा की गई मुसीबत से जूझ रहा है। इस मुसीबत से बचने के लिए छोटा प्राणी एक ऐसी तरकीब का प्रयोग करता है जिसे हम आमतौर पर अनैतिक कहते हैं।

इस तरकीब पर अमल करते समय खरगोश व्यक्तित्व के कुछ उम्दा गुणों की मिसाल पेश करता है। इन गुणों में साहस, खतरे के सामने आत्मविश्वास, किसी घटना के अंतिम क्षण तक अपना दिमाग़ ठंडा रखने की क्षमता और अपने से ज़्यादा ताक़त और उम्रवाले से उचित बर्ताव करना शामिल है।

हमें इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिए कि कहानी कितनी तेज़ गति से आगे बढ़ती है। शुरुआत में एक अजीब–सी व्यवस्था लागू की जाती है जिसके तहत रोज़ एक जानवर स्वेच्छा से बूढ़े राजा का शिकार बनेगा। इस तरह की दैनिक व्यवस्था स्थापित होने के बाद जल्दी ही छोटे खरगोश की बारी आती है और कहानी का केन्द्रीय हिस्सा प्रकट होता है। बाक़ी घटनाएँ बहुत तेज़ी से घटती हैं, क्योंकि अपने को बचाने की एक ख़तरनाक रणनीति तय कर लेने के बाद खरगोश एक भी क्षण बर्बाद नहीं कर सकता। कहानी सुनने वाला संवादों के ज़रिए एक के बाद एक स्थिति से 'धक्का खाते हुए' आगे बढ़ता है। यह स्पष्ट रहता है कि सुननेवाले के पास इस बात का कोई विकल्प नहीं है कि वह स्थिति को खरगोश की निगाह से देखे।

यह संक्षिप्त विश्लेषण उन कारणों की पहचान के लिए पर्याप्त है जिनसे इस कहानी को बच्चों के बीच भारी लोकप्रियता मिली है। सबसे पहली बात यह है कि कहानी उन्हें एक ऐसा चरित्र यानी हीरो देती है जिसके साथ वे पूरा तादात्म्य बैठा सकते हैं। यह चरित्र है खरगोश। कहानी में उसकी भूमिका उसी तरह की चुनौतियों और मुसीबतों से गुज़रती है जैसी कि बच्चे अपने दैनिक जीवन में अक्सर महसूस करते हैं। वह छोटा और शक्तिहीन है, उसे एक ऐसा काम करना है जो वह करना नहीं चाहता, उसे एक ऐसे प्राणी के हाथों मारे जाने का डर है जिसके पास पूरी सत्ता भी है और शारीरिक ताकत भी। खरगोश की परिस्थिति के इन पहलुओं से मिलते–जुलते पहलू हर बच्चे की ज़िन्दगी में उभरते रहते हैं। यद्यपि हम उन्हें अक्सर देख नहीं पाते क्योंकि हम माता–पिता और अध्यापक की भूमिकाएँ निभाने में बेहद व्यस्त रहते हैं। उदाहरण के तौर पर हममें से बहुत कम लोग यह जानते हैं कि अचानक होनेवाली मृत्यु का डर बचपन में चिन्ता के सबसे बड़े स्रोतों में शामिल है। किसी बड़े और मज़बूत व्यक्ति से आमना–सामना होने की आशंका भी इसी प्रकार की चिन्ता पैदा करती है।

कहानी शुरू होते ही बच्चों का ध्यान इसलिए खींचती है क्योंकि बच्चे स्वयं को कहानी में देख सकते हैं। इसके बाद कहानी में होनेवाली घटनाओं से उनके आकर्षण को बल मिलता है। नन्हा खरगोश एक रणनीति चुनता है और वह कारगर सिद्ध होती है। वह न केवल उसके लिए सफल होती है, बल्कि समस्या को हमेशा के लिए और सबके लिए ख़त्म कर देती है। छोटे बच्चों को इसी तरह का

हल पसंद आता है। खरगोश की रणनीति के आकर्षण का एक और कारण यह है कि वह बच्चे में हमेशा पाई जानेवाली एक भोली–भाली इच्छा पर आधारित है– बहाना बनाने की इच्छा। देरी से आने के खरगोश द्वारा दिए गए बहाने में एक और आकर्षण यह है कि उसका उद्देश्य अपनी जान बचाना नहीं, शेर को मारना भी है। वास्तव में खरगोश की दुविधा इसलिए इतनी कठिन है कि क्योंकि वह अन्यायी को जान से मारे बग़ैर खुद को बचा नहीं सकता। इसी तरह कहानी बच निकलने का एक ज़बरदस्त नाटक पेश करने के लिए, बहादुरी से किए गए नाश का इस्तेमाल करती है। यदि उसमें कोई नैतिकता है तो वह आत्म–रक्षा की नैतिकता ही है। इस बात को भी हम तभी ठीक से देख सकते हैं जब हम कहानी को बच्चे की निगाह से देखें। यदि हम बड़ों की निगाह से इस कहानी को देखने की ज़िद करें तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यह एक अनैतिक कहानी है– जैसी कि वह दरअसल है भी।

**ज़रूरत क्या है?**

अब तक यह स्पष्ट हो गया होगा कि बच्चों के लिए एक अच्छी कहानी सुनने का नैतिकता या नैतिक शिक्षा से कोई संबंध नहीं है या कम–से–कम सीधा संबंध नहीं है। अधिक गहरे स्तर पर खरगोश और शेर की कहानी में एक प्रेरक बात है। वह दिखाती है कि ख़तरे के सामने दिमाग़ ठंडा रखने के क्या फ़ायदे हैं। कहानी यह भी दिखाती है कि सोच–समझ और कल्पना से काम लेना कितना महत्त्वपूर्ण है। लेकिन ये बातें पारम्परिक अर्थ में 'नैतिक शिक्षा' नहीं कही जा सकती। वास्तव में महान पारम्परिक कहानियाँ शायद ही पारम्परिक अर्थ में नैतिक शिक्षा देती हों। हमारे लिए ज़्यादा ज़रूरी इस बात पर ग़ौर करना है कि कहानी सुनाने का उद्देश्य बच्चे का नैतिक विकास करना नहीं है। कहानी सुनाने से होनेवाले लाभ काफ़ी अलग हैं, और वे इस प्रकार हैं :

**कहानियाँ अच्छी तरह सुनने की क्षमता का विकास करती हैं**

अच्छा श्रोता कौन है? वह जो अन्त तक सुनता रहे। यह बात हम बहुत से लोगों के बारे में नहीं कह सकते। यहाँ तक कि औपचारिक बहसों के दौरान भी लोग लगातार टोकते रहते हैं। इसका कारण उनकी यह मानकर चलने की आदत है कि उन्हें पहले से पता है कि बोलनेवाला क्या कहेगा? एक और कारण यह है कि उनमें सुनने का धैर्य नहीं होता। आश्चर्य की बात नहीं कि सुनने को अब सिर्फ़ एक कौशल नहीं, बल्कि एक रवैया माना जाने लगा है जिसे प्रोत्साहित करने के लिए ऊँचे स्तर के प्रबंधन और प्रशासन के कोर्स उपलब्ध हैं। कहानी सुनाने से हमारी ज़िन्दगी के उस निर्णायक दौर में धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित होती है जब सुनने की आदत और उसमें निहित रवैया जीवनभर चलनेवाली आदतों का रूप ले सकते हैं।

यह बात थोड़ी अजीब है कि अच्छे श्रोता हमारे उस देश में दुर्लभ हो गए हैं जहाँ एक पुरानी और मज़बूत मौखिक संस्कृति रही है। मेरा अंदाज़ है कि इस परिस्थिति का संबंध बचपन में कहानी

सुनाने की अवहेलना से है। ऐसा लगता है कि आधुनिक भारत के पास बच्चों को नियमित रूप से कहानी सुनाने का समय नहीं है। इस कमी के परिणाम अब स्पष्ट होते जा रहे हैं।

**कहानी सुनाने से अंदाज़ लगाने का प्रशिक्षण मिलता है**

अपनी पसंद की कहानियाँ बच्चे बार–बार सुनना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि कहानी से एक बार अपना परिचय हो जाने पर वे इस परिचय का इस्तेमाल ग़ौर से सुनने की अपनी बढ़ती हुई क्षमता का परीक्षण करने के लिए करते हैं। स्वाभाविक है कि ये परीक्षण अनजाने में होता है। बच्चों को इस बात से खुशी होती है कि कहानी को दूसरी या तीसरी बार सुनते समय वे सफलतापूर्वक अंदाज़ लगा सकते हैं कि आगे क्या होगा? अंदाज़ के सही सिद्ध होने का आनन्द ही वह इनाम है जो कहानी सुनने से एक अनुभवी श्रोता को मिलता है और यह सिर्फ़ आनन्द नहीं है। इससे कहानी सुननेवाले बच्चे की अंदाज़ लगाने की क्षमता से विश्वास भी बढ़ता है। सर्वांगीण विकास में इस विश्वास की एक गहरी भूमिका होती है– ख़ासकर पढ़ने की क्षमता के विकास में। यह क्षमता स्कूल के शुरुआती दो वर्षों की सबसे बड़ी चुनौती होती है। साक्षरता और पढ़ने की क्षमता के विकास में अंदाज़ लगाने की क्षमता के योगदान की विस्तृत चर्चा मैंने अपनी पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' में की है।

अंदाज़ लगाने की क्षमता का महत्त्वपूर्ण योगदान अन्य विषयों, विशेषकर गणित और विज्ञान में भी है। गणित की पढ़ाई में नियमों के इस्तेमाल से समस्या का हल निकालने का सैद्धांतिक महत्त्व है। कहानियों में भी नियम होते हैं। फ़र्क़ यही है कि ये नियम रूपकों की शक्ल में होते हैं। मिसाल के तौर पर कई कहानियाँ इस नियम का पालन करती हैं कि छोटे प्राणी बड़ों को धोखा देकर विजय प्राप्त करते हैं। खरगोश और शेर की कहानी में यही होता है। कहानियाँ सुनते–सुनते बच्चे उनमें निहित नियम पकड़ लेते हैं और यह पकड़ उनकी अंदाज़ लगाने की क्षमता को बेहतर बनाती है।

**कहानियाँ हमारी दुनिया को फैलाती हैं**

मैं उस दुनिया की बात कर रहा हूँ जिसे हम अपने सिर या दिमाग़ में लेकर चलते हैं। कहानियाँ उसे इस अर्थ में फैलाती हैं कि हम उनके ज़रिए ऐसे लोगों और स्थितियों को जान लेते हैं जिनसे हमारा वास्ता अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं पड़ा।

सवाल है कि ऐसे लोगों या स्थितियों को जानने से क्या फ़ायदा है? फ़ायदा यह है कि वे जीवन का अंग हैं। भले हम व्यक्तिगत रूप से उन्हें न जानते हों पर वे हमें दिमाग़ी रूप से परेशान करती हैं, खासकर बचपन में– लेकिन एक सामान्य अर्थ में यह परेशानी जीवनभर चलती है। उदाहरण के लिए छोटे बच्चे बुरे आदमियों की फ़िक्र करते रहते हैं, भले ही उनके आसपास कोई बहुत बुरा आदमी न हो। इसी तरह वे भीतर यह आशा करते हैं कि उन्हें किसी बेहद होशियार, सुन्दर या अच्छे इंसान से मिलने का मौक़ा मिलेगा। आदर्श रूप की कल्पना और भयंकर विपत्ति का डर, दोनों ही बाल–मनोविज्ञान में शामिल हैं। पारम्परिक कहानियाँ इस मनोविज्ञान को व्यंजित करती हैं, और इसीलिए

वे बच्चों को आसानी से खींच लेती हैं। कहानी सुनने से छोटा बच्चा, जो अभी साक्षर नहीं बना है, अपनी वास्तविक दुनिया से कहीं बड़ी दुनिया के कल्पित रूप का अनुभव पा लेता है।

एक बात और भी है कि कहानियों से मिलनेवाला अनुभव बेतरतीब नहीं होता। उल्टे, यह अनुभव हमारी अराजक दुनिया को एक संतोषजनक क्रम या बुनावट में ढाल देता है। एक गहरे अर्थ में यह एक 'नैतिक बुनावट' होती है – लेकिन एक आम अर्थ में नहीं। कमज़ोर जीतता अवश्य है, लेकिन कई बार ग़लत साधनों का प्रयोग करके। भूखे शेर से खरगोश का झूठ बोलना एक उदाहरण है।

**कहानी सुनाना और पढ़ना**

अंत में, कहानी कहने का महत्त्व हम बच्चे के भाषाई साधनों के विस्तार में देख सकते हैं। शब्द एक बहुत ही निजी सम्पत्ति होते हैं। वे हमें एक बहुत निजी अर्थ में संसार की चीज़ों को अलग–अलग नाम देने की क्षमता देते हैं। लेकिन दूसरी तरफ़ शब्द एक ऐसी सामाजिक सम्पत्ति भी है जिसका इस्तेमाल हम दूसरों से अपने अनुभव बाँटने के लिए करते हैं। शब्दों की यह दो–तरफ़ा प्रकृति ही उन्हें अर्थ देती है। उदाहरण के लिए बच्चे को अपने निजी अनुभव से यह मालूम होता है कि भूख लगने पर शेर को कैसा महसूस हो रहा होगा। कहानी बच्चे को 'भूखा' शब्द का अर्थ इस तरह फैलाने में मदद देती है कि उसमें शेर भी शामिल हो जाए। बच्चे जितनी ज़्यादा कहानियाँ सुनेंगे, उनकी शब्दावली में उतना ही दूसरों के अनुभवों का अर्थ शामिल करने की सामर्थ्य आती जाएगी। इस तरह देखें तो बचपन में सुनी गई कहानियाँ आगे चलकर पढ़ने की क्षमता का आधार बनती हैं।

वास्तव में कहानी के संदर्भ में ऊपर कही गई चारों बातें पढ़ने पर भी लागू होती है। पढ़ने की क्षमता बच्चों का परिचय भाषा में निहित नियमों और संरचनाओं से कराती है। अच्छी तरह पढ़ने की क्षमता होशियारी से अंदाज़ लगाते चलने की आदत पर निर्भर है। भाषा के नियमों से परिचित होकर बच्चे यह अंदाज़ लगा लेते हैं कि वाक्य या कथन में आगे क्या आनेवाला है? इस दृष्टिकोण से कहानी सुनाना बच्चों को साक्षर बनाने के लिए उपयोगी है।

**कहानी सुनाने का कौशल**

कहानी सुनाने की कला पर अधिकार पाने के इच्छुक व्यक्ति के लिए ज़रूरी है कि वह स्मृति को गंभीरता से कहानी को लें। यदि कहनेवाले को कहानी ठीक से याद नहीं है तो वह अच्छी से अच्छी कहानी को भी चौपट कर सकता है। याद कर लेने से आत्मविश्वास बढ़ता है और कहानी कहनेवाला इत्मीनान महसूस करता है। कहानी सुननेवालों से रिश्ता बनाने के लिए इत्मीनान या चैन बहुत ज़रूरी है। दूसरी बात यह है कि जब कहानी अच्छी तरह याद हो जाती है तो कहनेवाला उसे एक ख़ाके या खाली नक़्शे की तरह इस्तेमाल कर सकता है।

इस नक़्शे को अपनी सुविधा या सुननेवालों के मूड के अनुसार भरा जा सकता है। कहानी को छोटा या बड़ा करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। किसी दिन आप चाहते हैं कि जल्दी–जल्दी उस बिन्दु

पर पहुँच जाएँ जहाँ खरगोश शेर के सामने खड़ा है। किसी और दिन आपकी इच्छा होती है कि कहानी के पहले हिस्से को फैलाएँ, इस बात की विस्तृत चर्चा करें कि भोजन के इंतज़ार में शेर के मन में कैसे–कैसे विचार आ रहे होंगे? और शेर की गुफा की तरफ़ जाते हुए खरगोश के दिमाग़ में कौन–कौन सी बातें और रणनीतियाँ उभर रही होंगीं?

कहानी को लेकर बच्चों के साथ संवाद कई तरह के विकल्प पेश करता है। आप चाहें तो नाटकीय ढंग से दो आवाज़ों में बोलें, इशारों या मुद्राओं से भी काम लें। संवाद को सजीव बनाने के लिए आप हाथ की कठपुतलियों का प्रयोग भी कर सकते हैं। आप कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चलकर दोनों भूमिका खुद निभा सकते हैं। ये सभी संभावनाएँ रोचक हैं और वे हमें इस बात की चुनौती देती हैं कि हम एक ही कहानी को साल–दर–साल या एक ही साल में कई बार सुनाते हुए अपनी सामर्थ्य बढ़ाते चलें।

कहानी सुनाना यदि किसी शिक्षक की दैनिक ज़िन्दगी में शामिल है तो वह कभी उबाऊ नहीं हो सकती। पर कहानी को रोज़ की घटना बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम प्राइमरी स्कूल के पाठ्यक्रम की अपनी धारणाओं को गंभीरतापूर्वक बदलें।

**लेखक– प्रो. कुष्ण कुमार,, प्राथमिक शिक्षा के मुद्दे, अंक 1 (2) में प्रकाशित।**